International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गज़ल में वर्तमान गज़ल कारों का योगदान

प्रेमलता उपाध्याय"स्नेह"[1], डॉ अनीता नायक[2]

[1]पी.एच.डी. शोधार्थी(हिंदी विभाग)[2]शोध निर्देशक (विभागाध्यक्षहिंदी विभाग)

[1]हिंदी अध्ययनशाला व शोध केंद्र, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर(मध्य प्रदेश)

[2]हिंदी शोध केंद्र-शासकीय ज्ञान चंद्रश्रीवास्तव स्नातकोत्तर महाविद्यालयदमोह (मध्य प्रदेश)

भूमिकाः-चंद्रसेन विराट के अनुसार,"मेरी नजर में ग़ज़ल एक ऐसी शब्द काव्य रचना है जिसमें कवि को हर शेर में विभिन्नता से प्रतिपादित करने की छूट है,तथापि संपूर्ण काव्य रचना में एक विशिष्ट छंद विधान का अनुशासन पाले थे, एवं एक सांस्कृतिक भाव मई संप्रेषण युक्त रचित भाव व्यंजना अनुस्यूत है।"[1]

आज काव्य कला के माध्यम से अभिव्यक्ति हेतु कई विधाओं पर विशेष बल दिया जा रहा है जैसे छंद मुक्त कविता, गीत ,नवगीत, हाइकु, सेदोका, वर्ण पिरामिड, शब्द पिरामिड, ग़ज़ल आदि। मन के भावों को अभिव्यक्त करने हेतु ग़ज़ल एक सशक्त माध्यम बनकर सामने आई है।

ग़ज़ल का अर्थः-गजल अरबी भाषा का स्त्रीलिंग शब्द है ।जिसका शाब्दिक अर्थ है'प्रेयसी तथा प्रेमी का वार्तालाप '।ऐसा भी कहा जाता है कि ग़ज़ल फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'मृगनयनी'।हिंदी साहित्य कोश में ग़ज़ल का अर्थ,"नारियों से प्रेम की बात करना" बताया गया है।[2]

ग़ज़ल अरबी से फारसी,फारसी से उर्दू,उर्दू से अन्य भाषाओं के साथ हिंदी में भी आई है। भारत में यह विधा बहुत प्रचलित है ग़ज़ल का अपना एक सौंदर्य प्रभाव है।जो बलात् ही पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट करता है। ग़ज़ल की रसधार जब बहती है तो,सभी के ह्रदय को अभिसिंचित करते हुए अभिभूत कर देती है।

ग़ज़ल की संरचनाः-गजल की अपनी एक संरचना होती है। जिस प्रकार हिंदी में प्रत्येक छंद का अपना एक विधान होता है।ग़ज़ल की संरचना का वर्णन करते हुए 'महंमद मुस्तफा खाँ मदाह 'द्वारा संपादित 'उर्दू हिंदी शब्दकोश'में ग़ज़ल की परिभाषा इस प्रकार दी गई है "ग़ज़ल स्त्री या प्रेमिका से प्रेमालाप, उर्दू-फारसी कविता का एक विशेष प्रकार ,जिसमें प्रायः 5 से 11 शेर होते हैं,और पहला शेर 'मतला'कहलाता है। जिसके दोनों में पंक्तियां सानुप्रास होती हैं,और अंतिम शेर 'मकता'कहलाता है ।जिसमें शायर का उपनाम (तखल्लुस) आता है ग़ज़ल के संग्रह को 'दीवान'एवं संपूर्ण प्रकार के पद्य-संग्रह को 'बेयाज़'कहते हैं।"[3]

ग़ज़ल की संरचना और स्वरूप को निर्धारण करने के लिए निम्न बिंदुओं पर चर्चा करना आवश्यक और सहायक सिद्ध होगा।ग़ज़ल की संरचना के संबंध में डॉ नरेश निसार द्वारा बताई गई निम्न जानकारी गजल को समझने के लिए लाभप्रद है।

"1) ग़ज़ल के विभिन्न शेरों की एक योजना होती है।

2) ग़ज़ल का प्रत्येक शेर कथावस्तु की दृष्टि से स्वतंत्र इकाई होता है।

3) गजल के किसी भी शेर की कथावस्तु का प्रसार ऐसा नहीं होना चाहिए,जिस का पूर्ण अर्थ जानने के लिए उससे पूर्व या बाद के शेर का सहारा लेना पड़े।

4) ग़ज़ल के शेरों को काफिया व रदीफ के अनुरूप रचा जाना चाहिए।

5) ग़ज़ल के शेरों को एक ही वज्न-बहर में रचा जाना अनिवार्य है।

6) ग़ज़ल का प्रारंभ 'मतले'से होता है।

7) ग़ज़ल की पहली दो पंक्तियों को 'मिसरा'कहते हैं। यह तुकान्त होती हैं।

8) ग़ज़ल का अंत 'मकते'से किया जाता है।"[4]

ग़ज़ल की संरचना को जानकर,बारीकियों को समझ कर ही गजल का सही आनंद लिया जा सकता है।ग़ज़ल की रचना करने वाले नवांकुरों के लिए यह जानकारी लाभप्रद सिद्ध होगी।

<u>हिंदी में ग़ज़ल की परंपराः-</u>भारतवर्ष में हिंदी भाषा में ग़ज़ल की परंपरा का उल्लेख करते हुए रोहिताश्व अस्थाना कहते हैं ,"हिंदी में ग़ज़ल की इस परंपरा का श्री गणेश, तेरहवीं शताब्दी में अमीर खुसरो, कबीर और उनके समकालीन कवियों द्वारा स्फुट रूप में हुआ। अमीर खुसरो की अनेक गजलें का रंग हिंदी ग़ज़ल में विहित हिंदी की संभावनाओं को स्पष्ट करता है।कालांतर में भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र से लेकर निराला,शमशेर और दुष्यंत तक हिंदी गजल की सुदीर्घ परंपरा का विकास हुआ।"[5]

विकास का परंपरा का उल्लेख करते हुए श्री रतीलाल साहिल लिखते हैं,"हिंदी में अमीर खुसरो,कबीर,बहादुर शाह जफर,भारतेंदु हरिश्चंद्र,बद्री नारायण उपाध्याय,चौधरी प्रेमधन, प्रताप नारायण मिश्र,गया प्रसाद शुक्ल स्नेही,मैथिलीशरण गुप्त,सूर्यकांत त्रिपाठी निराला आदि प्राचीन कवियों ने भी ग़ज़ल विधा में अपने अपने तरीके से आजमाइश की है।"[6]

वर्तमान में हिंदी के प्रमुख ग़ज़ल कारः-वर्तमान काल में हिंदी ग़ज़ल कारों में दुष्यंत मील का पत्थर है। ग़ज़ल को नया रूप देने में सामान्य जनता की आवाज बनाने में दुष्यंत की अहम भूमिका है।दुष्यंत के समकालीन ग़ज़ल कार शमशेर बहादुर सिंह,अदम गोंडवी,बल्ली सिंह चीमा,ज्ञानप्रकाश विवेक,गिरिराज शरण अग्रवाल, रामकुमार कृषक, राम मेश्राम,जहीर कुरैशी, कमल किशोर श्रमिक,माधव कौशिक,देवेंद्र आर्य,मधुवेश, महेश अग्रवाल,हरेराम समीप,राजेश रेड्डी,इंदु श्रीवास्तव,विनय मिश्रा,बीएम मिश्रा,शिवओम अंबर,किशन तिवारी आदि प्रसिद्ध नाम है।दुष्यंत के बाद के हिंदी ग़ज़ल कारों में नीरज, सूर्य भानु गुप्त, चंद्रसेन विराट, डॉ कुंवर बेचैन,बालस्वरूप राही, शेरजंग गर्ग,बेकल उत्साही, रोहिताश्व अस्थाना, कृष्ण गोपाल विद्यार्थी, दिनेश रघुवंशी, अजेय मनचंदा,महेंद्र जैन आदि के नाम उल्लेखनीय है।

ग़ज़ल का बदलता स्वरूपः-कालांतर में गजल ने अपना स्वरूप बदला है। अब गजल प्रेमी प्रेमिका के वार्तालाप और विरह की वेदना से बाहर निकल कर,यथार्थ के धरातल पर नए रूप में अवतरित हुई है। ग़ज़ल अब पूंजीवादी, सामाजिक,राजनीतिक, धार्मिक,आर्थिक शैक्षिक कुचक्रों के शिकार स्त्री, युवा,बच्चे, दलित, किसान मजदूर,आदिवासी, अल्पसंख्यक की पीड़ाओं को समझ कर उनके दर्द को मुखरित करती है।साहित्य वही है जो अंतर मन की वेदना को शब्द प्रदान करता है।साहित्य की इसी विशेषता को हजारी प्रसाद जी ने कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है,"मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्ष पाती हूं। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से बचा ना सके। जो उसकी आत्मा को तेजोद्दीप्त ना बना सके।जो उसके हृदय को पर दुखःकातर और संवेदनशील ना बना सके।उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।"[7]

आज हिंदी ग़ज़ल मैं सर्वव्यापकता पाई जाती है। ग़ज़ल मानव ह्रदय में निहित वेदना की वह धार है।जो अथाह दुख से निसृत हो बह निकलती है। वेदना की यही अभिव्यक्ति हम चाह कर भी रोक नहीं पाते हैं। जिस प्रकार क्रौंच पक्षी की वेदना श्लोक बन कर वाल्मीकि की रामायण में और निराला की सरोज स्मृति में तट बंध तोड़ कर बह निकली।

क्रांति का स्वरः-वर्तमान युग में ग़ज़ल प्रेम तक सीमित ना रह कर क्रांति के स्वरों को व्यक्त करती है। वह निरंतर सामान्य व्यक्ति के जीवन की संवेदनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम बनी है।दुष्यंत कुमार अपने मन के भावों को इस तरह व्यक्त करते हैं ,

"वे कर रहे इश्क में संजीदा गुफ्तगूँ,

मैं क्या बताऊं मेरा कहीं और ध्यान है।"[8]

नचिकेता गजल में क्रांति के स्वरों को कुछ इस प्रकार से परिभाषित करते हैं"इसका जन्म तो खूंखार और अमानवीय राज्य सत्ता के खिलाफ व्यापक जन साधारण के असंतोष, असहमति, आक्रोश और प्रतिशोध की सार्थक अभिव्यक्ति के लिए हुआ है"।[9]

गजल शोषण के खिलाफ अपने आक्रोश को व्यक्त करने का, आम आदमी की पीड़ा के बखान का साधन बनी हैं।डॉक्टर हरीतिमा कुमार कहती हैं,"ग़ज़ल को श्रंगार की परिधि से निकालकर दुष्यंत ने उसे आम आदमी की जिंदगी से जोड़ दिया उन्होंने ग़ज़ल को दरबार से बाहर निकलकर घर बार से जोड़ दिया।"[10]

प्रसिद्ध गजलकार जहीर कुरैशी अपनी बात को कुछ इस तरह से कहते हैं,

"किस्से नहीं है यह किसी बिरहन की पीर के।

यह शेर हैं अंधेरे में लड़ते जहीर के।

मैं आम आदमी हूं तुम्हारा ही आदमी।

तुम काश देख पाते मेरे दिल को चीर के।"[11]

गजल इस युग में अपने प्रेम के सिंहासन से उतर कर जनसाधारण में आसीन हो गई। आम जनमानस के विचारों के धरातल में घुल मिलकर उसके दर्द को अपने शब्दों में ढालने लगी।

स्त्री विमर्शः-समाज में स्त्री के गिरते स्तर उसकी आकुलता,वेदना, पीड़ा को गजलों में व्यक्त किया गया।प्रभा दीक्षित कहती हैं,"ग़ज़ल आधुनिक युग में सामंती युग की बेजुबान रखैल नर्तकी नहीं है,बल्कि आधुनिक आजाद औरतों की तरह अदब की अन्य विधाओं की अग्रिम कतार में मुक्ति का परचम उठाएं, इंकलाब की घोषणा कर रही है।"[12]

नारी को भी जुबान मिली है। ग़ज़ल के माध्यम से स्त्री की समस्याओं को समाज के सामने लाया गया है।नारी के दैहिक शोषण का चित्र डीएम मिश्रा ने इस प्रकार उकेरा है,

"गांव की ताजी चिड़िया भूनकर प्लेट में रखी जाती है।

फिर गिद्धों की दावत चलती पुरुषोत्तम के कमरे में।"[13]

राजनीति में आरक्षण के चलते स्त्री को चुनाव तो लड़वा दिया जाता है, पर सारे कार्य पति ही करता है। नारी को राजनीति करने की स्वतंत्रता नहीं प्रदान की जाती है। ना हीं कहीं बाहर जाने की आज्ञा प्रदान की जाती है।डीएम मिश्रा इस यथार्थ को समझाते हुए कहते हैं ,

"लछमनिया भी चुनी गई परधान मगर,

उसका पति प्रधान देख कर आया हूँ। "[14]

स्त्री की व्यथा को मन में दबी बातों को ना कह पाने की व्यवस्था ग़ज़ल में दिखाई देती है। होठों पर मौन धरे स्त्री की पीड़ा को जहीर कुरैशी कुछ इस तरह कहते हैं

"क्या कहे अखबार वालों से व्यथा औरत।

यौन शोषण की युगो लंबी कथा औरत।"[15]

पेट की आग को शांत करने के लिए किस तरह से वह अपने शरीर को बेचकर परिवार का भरण पोषण करती है।जहीर कुरैशी नारी व्यथा को चित्रित करते हुए कहते हैं

"अंधियारा गिरते ही वह तन की दुकान सजाती है।

इसलिए तो बाट जोहती है अंधियारा होने की।"[16]

<u>भ्रूण हत्याः-</u>बेटी को कोख में मार देने की परंपरा ने इतना विकराल रूप रखा है,कि उसके दुष्परिणाम हमारे देश के विभिन्न राज्य बुरी तरीके से भुगत रहे हैं। पंजाब और हरियाणा में अब बेटों का ब्याह करने के लिए लड़कियां नहीं मिल रही हैं। लड़खड़ाता हुआ लिंगानुपात सामाजिक भविष्य को किस ओर ले जा रहा है।देवेंद्र आर्य कहते हैं,

"अब तो कोख में कब्रें भी होती हैं।

एक मां भी अब, धरती पर भगवान नहीं।"[17]

जहीर कुरैशी ने अपनी बात कुछ इस तरीके से कही है ,

"भ्रूण हत्याएं सड़क पर हैं ।

स्तब्ध मुद्राएं सड़क पर हैं।"[18]

किश्तों में फँसा आम आदमीबिना रुके लगातार चलते इस युग में महंगाई की बढ़ती समस्या, और महानगरों में किश्तों में फंसे आम आदमी के जीवन की व्यथा को प्रदर्शित करती यह रचना देखिए।जहीर कुरैशी इस मनो व्यथा को कुछ इस तरह व्यक्त करते हैं

"विष असर कर रहा है किश्तों में।

आदमी मर रहा है किश्तों में।

उसने एक मुश्त ले लिया था ऋण,

ब्याज को भर रहा है किश्तों में।।"[19]

मां-बाप को बोझ समझती आधुनिक पीढ़ीवर्तमान परिपेक्ष्य में देखा जाए तो, आज की आम समस्या है की, बच्चे माता-पिता को बोझ समझते हैं,और वृद्धावस्था में उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं।उनका जीना दुश्वार कर देते हैं। माता पिता और घर के बुजुर्ग सदस्य,उपेक्षा का शिकार होकर खून के आंसू रोते हैं। जहीर कुरैशी उनकी पीड़ा को समझ कर अपनी ग़ज़ल में कराह उठते हैं

"बोझ का पर्वत है बूढ़ा बाप बच्चों के लिए,

झिड़कियां मिलती उसे रोज आदर की जगह।"[20]

<u>दांपत्य जीवन में बिखरावः-</u>पति पत्नी के संवेदनशील संबंधों में,निरंतर दूरियां बढ़ रही हैं। आपस में संवाद शून्यता की स्थिति, वैवाहिक संबंधों के बिखराव का कारण बन रही है,और विवाह जैसी सामाजिक व्यवस्था के स्वरूप में लगातार परिवर्तन हो रहा है।

"घर में रहकर भी संवाद नहीं हम दोनों के बीच,

मौन पसरा है कई हफ्तों से संबंधों के बीच।"[21]

संक्षेप में यही कहना चाहूंगी के वर्तमान समय में ग़ज़ल कारों का सामान्य मनुष्य के दैनिक जीवन में धरातल स्तर पर अमूल्य योगदान दिखाई देता है आज का ग़ज़ल कार कपोल कल्पनाओं प्रेयसी के कोमल अंगों, हार श्रृंगार, मान मनुहार

प्रेमिका से विरह की बेचैनी पीड़ा और वेदना से निकलकर जीवन के कठोर सच को इंगित करता है आम आदमी की पीड़ा को जीता है और सच्चाई को बयान करने में तनिक भी संकोच नहीं करता है। गजलों में आज समाज की सच्चाई को उजागर करती हर घटना का जिक्र यथार्थ रूप में किया जाता है।गजल मनुष्य की यातना,दर्द,अनुभूति, छटपटाहट को वाणी देने का कार्य कर रही है।

संदर्भ सूचीः-

(1) चंद्रसेन विराट,हिंदी ग़ज़ल:गजल कारों की नजर में डॉक्टर सरदार मुजावर,पृष्ठ संख्या 31
(2) डॉक्टर अब्दुल रशीद ए.शेख, ग़ज़ल सौंदर्य मीमांसा,पृष्ठ संख्या 6
(3)डॉक्टर अब्दुल रशीद ए.शेख, ग़ज़ल सौंदर्य मीमांसा,पृष्ठ संख्या 7
(4) डॉ नरेश निसार, हिंदी ग़ज़ल:दशा और दिशा, पृष्ठ संख्या 17
(5) डॉक्टर रोहिताश्व अस्थाना, हिंदी ग़ज़ल उद्भव और विकास, पृष्ठ संख्या 367
(6) श्री रतीलाल साहिल,आरोह(ग़ज़ल अंक), पृष्ठ संख्या 28
(7) मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है, नया ज्ञानोदय (संपादक लीलाधर मंडलोई) अंक 180, फरवरी 2018,पृष्ठ संख्या 7
(8) दुष्यंत कुमार,साए में धूप,पृष्ठ संख्या 27
(9) नचिकेता,अष्टछाप,फोनिम पब्लिकेशन एंड डिसटीब्यूटर्स दिल्ली, तृतीय संस्करण 2017, पृष्ठ संख्या 7
(10) डॉक्टर हरीतिमा कुमार, दुष्यंत कुमार की गजलों में आमजन की पीड़ा की अभिव्यक्ति:हिंदी ग़ज़ल का परिदृश्य पृष्ठ संख्या 727
(11) जहीर कुरैशी, चांदनी का दुख, पृष्ठ संख्या 64
(12) प्रभा दीक्षित, हिंदी ग़ज़ल:जन पक्षधर जीवनानुभावों का ताप :हिंदी ग़ज़ल के परिदृश्य (संपादक मधु खराटे) पृष्ठ संख्या 118
(13) डीएम मिश्रा,आईना दर आईना,पृष्ठ संख्या 26
(14) डीएम मिश्रा,आईना दर आईना,पृष्ठ संख्या 27
(15) जहीर कुरैशी, चांदनी का दुख,पृष्ठ संख्या 117
(16) जहीर कुरेशी, समंदर ब्याहने आया नहीं,पृष्ठ संख्या 85
(17) देवेंद्र आर्य मोती मानस चून, पृष्ठ संख्या 21
(18) जहीर कुरैशी, एक टुकड़ा धूप,पृष्ठ संख्या 17
(19) जहीर कुरैशी,चांदनी का दुख,पृष्ठ संख्या 64
(20) जहीर कुरैशी,समंदर ब्याहने आया नहीं, पृष्ठ संख्या 28
(21) जहीर कुरैशी,भीड़ में सबसे अलग,पृष्ठ संख्या 15